"भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति"

शोधार्थी

श्रीमती कालिन्द्री कौशिक

शा॰पंडित माधवराव सप्रे महावि॰ पेंड्रा रोड जिला गौरेला पेंड्रा मरवाही (छ.ग.)

शोध निर्देशक

डॉ. अर्चना शुक्ला (प्राध्यापक समाज़शास्त्र)

शा॰माता शबरी नवीन कन्या स्नात॰ महावि॰ बिलासपुर (छ.ग.)

अटल बिहारी वाजपाई विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ॰ग॰)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का स्रोत मुख्यतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं में निहित है। अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पारंपरिक ज्ञान का प्रमुख स्रोत समुदाय के बुजुर्ग हैं, जिनके माध्यम से अनुभव और परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराएँ (20%), लोककथाएँ एवं लोकगीत (15%) तथा पारंपरिक चिकित्सक (10%) भी ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जनजातीय लोक संस्कृति के प्रमुख तत्वों में लोकनृत्य एवं लोकगीत (30%), पारंपरिक चिकित्सा (25%), त्योहार (20%), प्रकृति पूजा (15%) तथा कृषि ज्ञान (10%) प्रमुख रूप से सम्मिलित पाए गए, जो उनके सामाजिक जीवन, आस्था और आजीविका से गहराई से जुड़े हुए हैं। इसके साथ

ही पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के प्रमुख तरीकों में पारिवारिक परंपरा (38%), त्योहार एवं अनुष्ठान (24%), लोकगीत एवं लोककथाएँ (19%), पारंपरिक शिक्षा (14%) तथा अन्य माध्यम (5%) शामिल हैं, जिनके द्वारा यह ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संरक्षित रहता है।

इसके अतिरिक्त द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक ज्ञान (30%), आयुर्वेद (25%), योग (20%), पर्यावरण संबंधी ज्ञान (15%) तथा सामाजिक मूल्य (10%) महत्वपूर्ण घटक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली बहुआयामी है, जो मानव जीवन, स्वास्थ्य, प्रकृति संरक्षण तथा सामाजिक नैतिकता से गहराई से जुड़ी हुई है। अतः पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज के सतत और संतुलित विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बीज शब्द

भारतीय ज्ञान परंपरा, जनजातीय लोक संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली, प्रकृति संरक्षण, लोक परंपराएँ।

1.प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल प्राचीन ग्रंथों में सुरक्षित ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के लोक जीवन और सांस्कृतिक अनुभवों में भी अभिव्यक्त होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप अत्यंत व्यापक है जिसमें दर्शन, आयुर्वेद, योग, सामाजिक मूल्य तथा प्रकृति के साथ संतुलित जीवन की अवधारणा प्रमुख रूप से सम्मिलित है (Agarwal,2013)।

भारत के जनजातीय समुदाय इस ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण संरक्षक माने जाते हैं। उनका जीवन प्रकृति के साथ गहरे संबंध पर आधारित होता है और उनके सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवहार में पर्यावरण के संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (Behera,2010)।

जनजातीय लोक संस्कृति में ज्ञान का संचरण मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से होता है। लोकगीत, लोकनृत्य, कथाएँ तथा अनुष्ठान ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा पारंपरिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है (Roy Burman,2009)।

आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन और वैश्वीकरण के प्रभाव से जनजातीय समाज की पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन दिखाई दे रहा है, फिर भी उनके पास ऐसा समृद्ध अनुभवजन्य ज्ञान उपलब्ध है जो पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है (Sinha,2016)।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

2.साहित्य समीक्षा

भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने भारतीय ज्ञान परंपरा तथा जनजातीय लोक संस्कृति के संबंध में अनेक अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल शास्त्रीय ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोक जीवन और सामाजिक व्यवहार में भी व्यापक रूप से विद्यमान है।

अग्रवाल (2013) ने भारतीय ज्ञान परंपरा की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया है कि भारतीय समाज में ज्ञान का विकास केवल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से नहीं हुआ, बल्कि यह सामाजिक अनुभवों और सांस्कृतिक

परंपराओं के माध्यम से भी विकसित हुआ है। उनके अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधार मानव और प्रकृति के बीच संतुलन तथा सामाजिक मूल्यों की निरंतरता पर आधारित है।

बेहरा (2010) ने जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन करते हुए यह बताया कि जनजातीय समाज में प्रकृति के साथ सहअस्तित्व की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनके अनुसार जनजातीय समुदायों की धार्मिक मान्यताएँ, कृषि पद्धतियाँ और सामाजिक व्यवहार पर्यावरण के संरक्षण से गहराई से जुड़े हुए हैं।

राय बर्मन (2009) ने अपने अध्ययन में यह उल्लेख किया है कि जनजातीय समाजों में ज्ञान का संचार मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से होता है। लोककथाएँ, लोकगीत, नृत्य और सामुदायिक परंपराएँ इस ज्ञान को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

सिन्हा (2016) ने जनजातीय समाज और सामाजिक परिवर्तन के संबंध में यह बताया कि आधुनिकता और विकास प्रक्रियाओं के प्रभाव से जनजातीय समाज की पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है। इसके बावजूद जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराएँ और पारंपरिक ज्ञान आज भी उनके सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उपरोक्त अध्ययनों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के बीच गहरा संबंध विद्यमान है। यद्यपि विभिन्न विद्वानों ने जनजातीय संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान के अनेक पहलुओं पर चर्चा की है, फिर भी भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में जनजातीय लोक संस्कृति की भूमिका का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन इस संबंध को समझने का प्रयास करता है।

3.अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
- ❖ जनजातीय लोक संस्कृति के स्वरूप को समझना।
- ❖ भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के संबंधों का विश्लेषण करना।
- ❖ जनजातीय समाज में विद्यमान पारंपरिक ज्ञान की उपयोगिता का अध्ययन करना।

4.उपकल्पनाएँ

- ❖ भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में परिलक्षित होती हैं।
- ❖ जनजातीय लोक संस्कृति का स्वरूप भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रभावित है।
- ❖ भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के बीच घनिष्ठ संबंध पाया जाता है।
- ❖ जनजातीय समाज में विद्यमान पारंपरिक ज्ञान सामाजिक जीवन एवं आजीविका के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

5.अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर क्षेत्र के आसपास स्थित जनजातीय बहुल ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया। इन क्षेत्रों में गोंड, बैगा तथा अन्य जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। इन समुदायों की जीवन शैली मुख्यतः कृषि, वनोपज और पारंपरिक व्यवसायों पर आधारित है। अध्ययन के दौरान इन समुदायों की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का अवलोकन किया गया।

6. अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के विभिन्न आयामों को समझने के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से जानकारी प्राप्त की गई है।

6.1 प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्ययन क्षेत्र के जनजातीय समुदायों के चयनित व्यक्तियों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया गया। इसके अंतर्गत साक्षात्कार तथा प्रत्यक्ष अवलोकन की विधियों का उपयोग किया गया। उत्तरदाताओं से उनकी सांस्कृतिक परंपराओं, लोक व्यवहार, पारंपरिक ज्ञान तथा सामाजिक गतिविधियों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई।

6.2 द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक जानकारी विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा विश्वसनीय वेबसाइटों के अध्ययन के माध्यम से संकलित की गई। इन स्रोतों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा तथा जनजातीय संस्कृति से संबंधित सैद्धांतिक और ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की गई।

6.3 नमूना चयन

अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति (Purposive Sampling Method) का उपयोग किया गया। इस पद्धति के अंतर्गत ऐसे व्यक्तियों का चयन किया गया जो जनजातीय संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान के बारे में पर्याप्त जानकारी रखते हैं। कुल 20 उत्तरदाताओं को अध्ययन में शामिल किया गया।

6.4 डेटा विश्लेषण की विधि

संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक पद्धति के आधार पर किया गया है। प्राप्त जानकारी को तालिकाओं और प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे अध्ययन के परिणामों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

7.प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण

तालिका 7.1 - जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान के प्रमुख स्रोत

ज्ञान का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
बुजुर्ग	10	50%
लोककथाएँ और लोकगीत	3	15%
धार्मिक परंपराएँ	4	20%
पारंपरिक चिकित्सक	2	10%
अन्य	1	5%
कुल	20	100%

चित्र - 7.1 जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान के प्रमुख स्रोतो का क्षैतिज स्तंभ आरेख द्वारा प्रदर्शन -

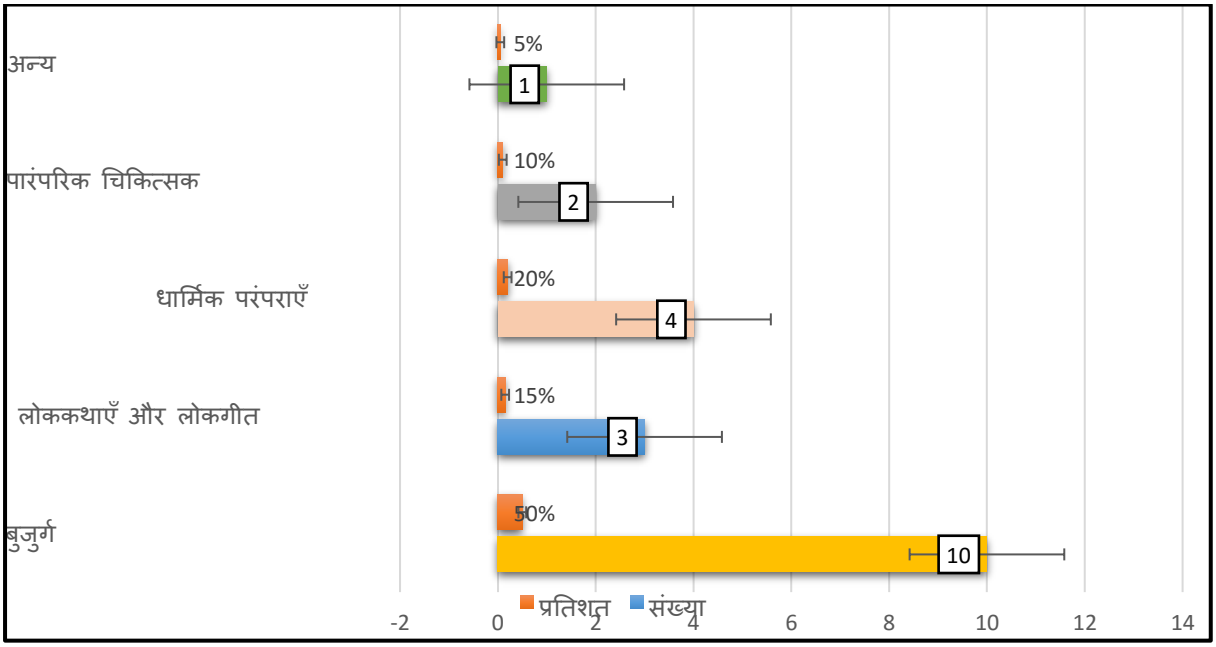

<u>विश्लेषण -</u> उपरोक्त चित्र - 7.1 से स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान के प्रसार में बुजुर्गों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। लगभग 51 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें पारंपरिक ज्ञान अपने परिवार के बुजुर्गों से प्राप्त होता है। इससे यह संकेत मिलता है कि जनजातीय समुदाय में अनुभव और परंपरा के माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण प्रमुख रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता है। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराएँ (20%) भी पारंपरिक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। वहीं लोककथाएँ और लोकगीत (15%) जनजातीय संस्कृति और ज्ञान को संरक्षित रखने का एक प्रभावी माध्यम हैं। पारंपरिक चिकित्सक (10%) भी स्थानीय उपचार पद्धतियों के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा अन्य स्रोतों (5%) से भी सीमित मात्रा में ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान मुख्यतः सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक माध्यमों से संरक्षित एवं प्रसारित होता है।

<u>तालिका 7.2 - जनजातीय लोक संस्कृति के प्रमुख तत्व</u>

तत्व	संख्या	प्रतिशत
लोकनृत्य और लोकगीत	6	30%
पारंपरिक चिकित्सा	5	25%
प्रकृति पूजा	3	15%
त्योहार	4	20%
कृषि ज्ञान	2	10%

<u>चित्र - 7.2 जनजातीय लोक संस्कृति के प्रमुख तत्वो का पाई आरेख द्वारा प्रदर्शन -</u>

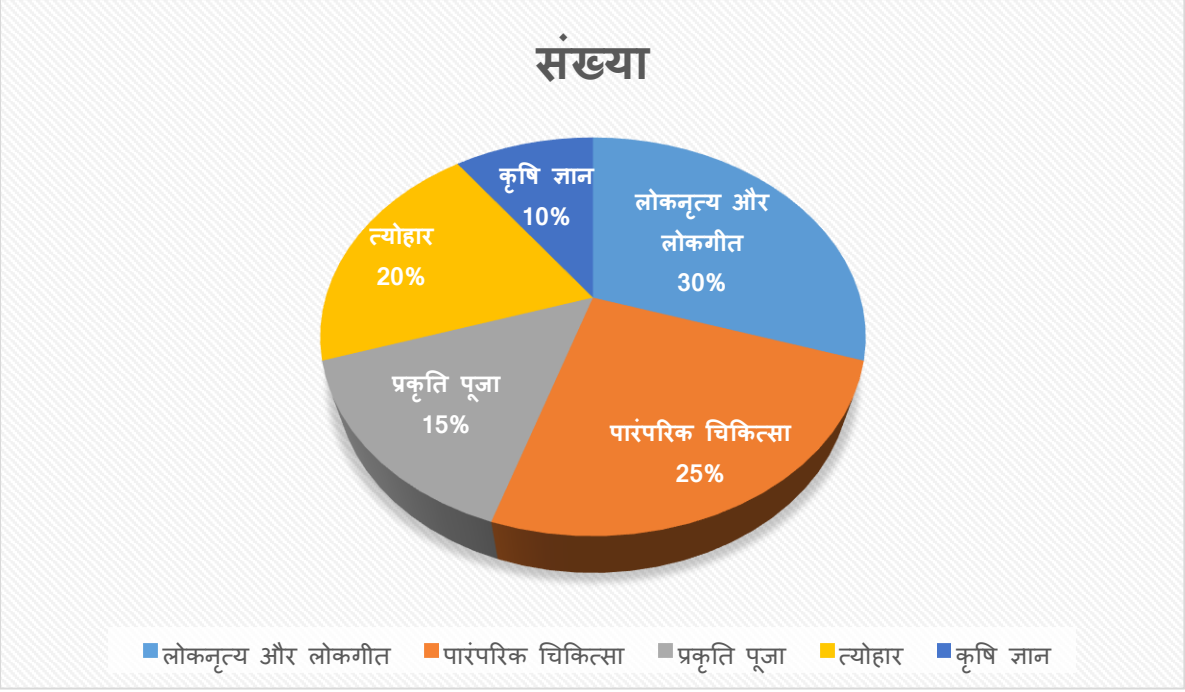

<u>विश्लेषण -</u> उपरोक्त चित्र - 7.2 से स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज की लोक संस्कृति में लोकनृत्य और लोकगीत का विशेष महत्व है। लगभग 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे प्रमुख सांस्कृतिक तत्व बताया है। इसके अतिरिक्त पारंपरिक चिकित्सा (25%) भी जनजातीय संस्कृति का महत्वपूर्ण भाग है, जो स्थानीय जड़ी-बूटियों और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है। त्योहार (20%) तथा प्रकृति पूजा (15%) भी जनजातीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं। इसके अलावा कृषि ज्ञान (10%) भी जनजातीय जीवन और आजीविका से जुड़ा एक महत्वपूर्ण तत्व है। इस प्रकार जनजातीय समाज की लोक संस्कृति विविध परंपराओं और मान्यताओं से निर्मित होती है।

तालिका 7.3 पारंपरिक ज्ञान संरक्षण के तरीके

तरीका	संख्या	प्रतिशत
पारिवारिक परंपरा	8	38%
त्योहार एवं अनुष्ठान	5	24%
लोकगीत और लोककथाएँ	4	19%
पारंपरिक शिक्षा	3	14%
अन्य	1	5%

चित्र - 7.3 पारंपरिक ज्ञान संरक्षण के तरीके का स्तंभ आरेख द्वारा प्रदर्शन -

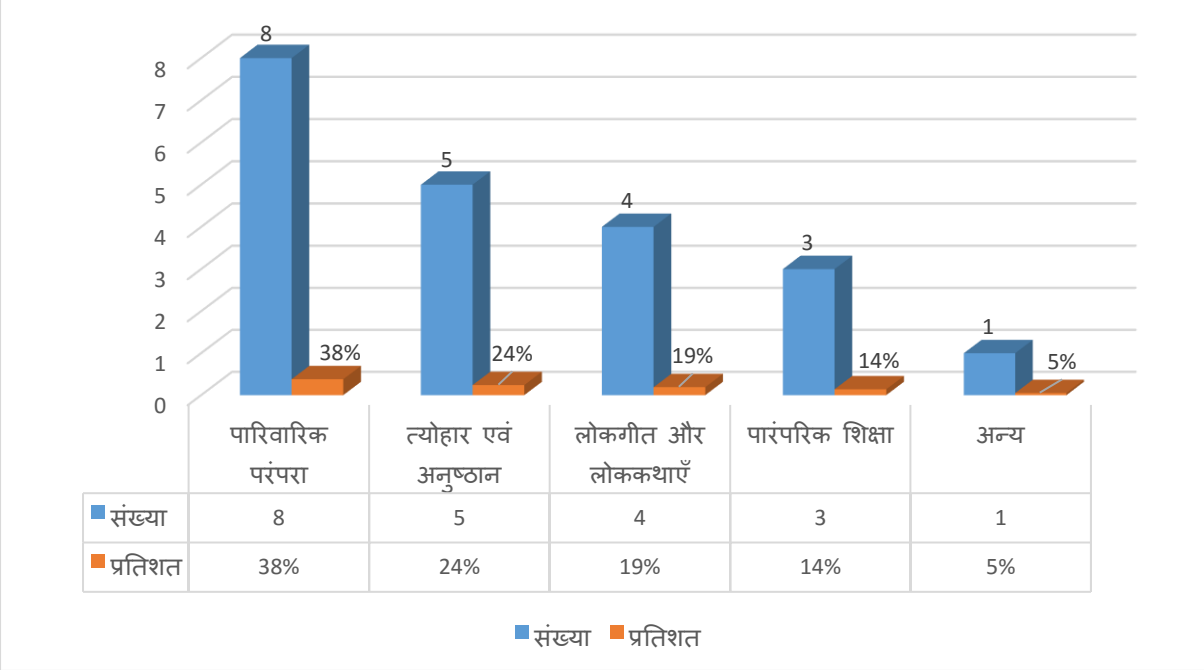

विश्लेषण - चित्र 7.3 से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में पारिवारिक परंपरा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। कुल 21 उत्तरदाताओं में से 8 (38%) ने बताया कि परिवार के बुजुर्गों द्वारा पारंपरिक ज्ञान अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जाता है। इसके अतिरिक्त त्योहार एवं अनुष्ठान भी ज्ञान के संरक्षण का एक प्रमुख माध्यम हैं, जिसे 5 (24%) उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया। लोकगीत और लोककथाएँ भी पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित रखने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिनका प्रतिशत 19 है। वहीं पारंपरिक शिक्षा के माध्यम से 14 प्रतिशत लोग ज्ञान के संरक्षण को मानते हैं। इसके अलावा 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य माध्यमों को भी महत्वपूर्ण बताया। इससे स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण मुख्यतः पारिवारिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से होता है।

तालिका 7.4 - भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख घटक (द्वितीयक स्रोत)

क्षेत्र	प्रतिशत
वैदिक ज्ञान	30%
आयुर्वेद	25%
योग	20%
पर्यावरण ज्ञान	15%
सामाजिक मूल्य	10%

चित्र - 7.4 भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख घटको का पाई आरेख द्वारा प्रदर्शन

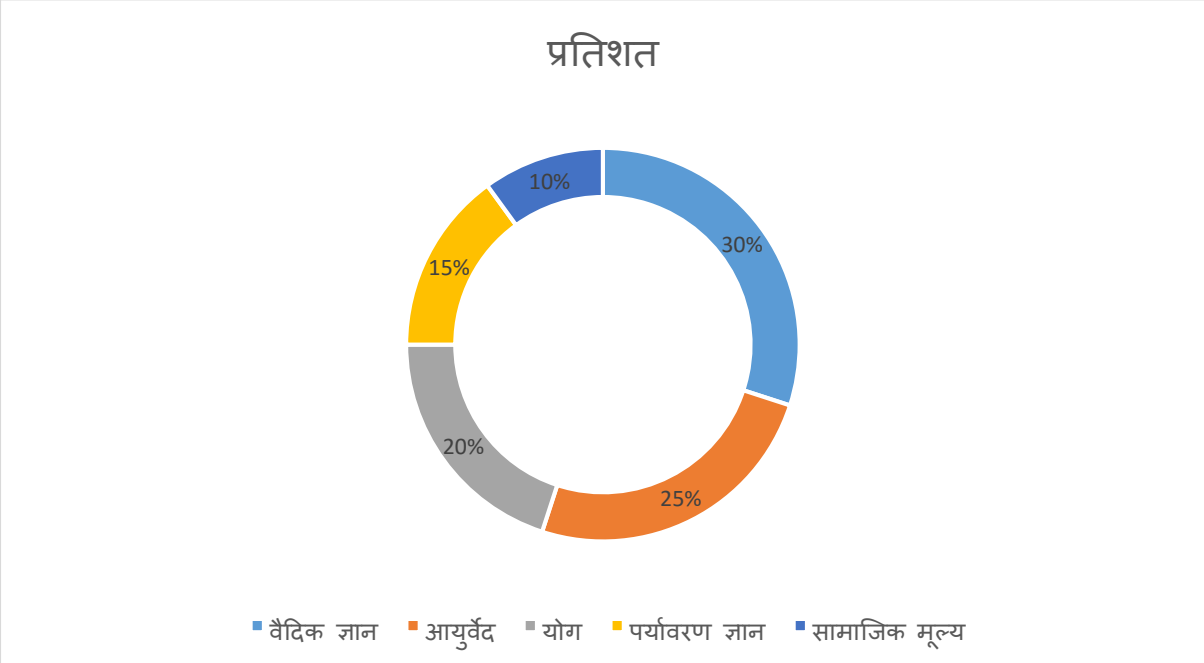

<u>विश्लेषण -</u> द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा बहुआयामी और समृद्ध है। इसमें वैदिक ज्ञान का प्रमुख स्थान है, जो लगभग 30 प्रतिशत के रूप में परिलक्षित होता है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद (25%) और योग (20%) भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग हैं, जो स्वास्थ्य और जीवन शैली से जुड़े हैं। पर्यावरण ज्ञान (15%) भारतीय संस्कृति में प्रकृति के संरक्षण और संतुलन की भावना को दर्शाता है। वहीं सामाजिक मूल्य (10%) समाज में नैतिकता, सहयोग और सामूहिक जीवन के सिद्धांतों को सुदृढ़ करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा विभिन्न क्षेत्रों के समन्वय से विकसित हुई है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के बीच गहरा संबंध पाया जाता है। अध्ययन में प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का प्रमुख स्रोत बुजुर्ग हैं, जिनके माध्यम से यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। इसके साथ ही लोककथाएँ, लोकगीत, धार्मिक परंपराएँ तथा पारंपरिक चिकित्सक भी ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जनजातीय लोक संस्कृति में लोकनृत्य, लोकगीत, त्योहार, प्रकृति पूजा और कृषि संबंधी ज्ञान जैसे तत्व प्रमुख रूप से विद्यमान हैं, जो उनके सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक परंपरा, त्योहार एवं अनुष्ठान, लोककथाएँ तथा पारंपरिक शिक्षा पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ जनजातीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में स्पष्ट रूप से दिखाई

देती हैं तथा यह ज्ञान सामाजिक जीवन, संस्कृति और आजीविका के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। इसलिए पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन के लिए इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है।

9. सुझाव

- 1.जनजातीय समाज में प्रचलित पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए स्थानीय स्तर पर सामुदायिक पहल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। ग्राम स्तर पर सांस्कृतिक गतिविधियों, लोक उत्सवों और पारंपरिक ज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन इस दिशा में सहायक हो सकता है।
- 2.जनजातीय लोक संस्कृति से संबंधित ज्ञान जैसे लोककथाएँ, लोकगीत, पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ तथा औषधीय ज्ञान का व्यवस्थित रूप से संकलन और दस्तावेजीकरण किया जाना आवश्यक है, ताकि यह ज्ञान समय के साथ लुप्त न हो।
- 3.भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के अध्ययन को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में इससे संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूक किया जा सकता है।
- 4.आधुनिक विकास योजनाओं के निर्माण में जनजातीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान और अनुभवों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए, क्योंकि ये ज्ञान प्रणालियाँ पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।
- 5.जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक संरक्षण के लिए स्थानीय प्रशासन, शिक्षण संस्थानों और सामाजिक संगठनों के बीच समन्वय स्थापित किया

जाना चाहिए, जिससे जनजातीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और ज्ञान परंपरा को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जा सके।

10. संदर्भ सूची

- अग्रवाल, ए. (2013). भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।
- बेहरा, डी. के. (2010). भारत की जनजातीय संस्कृति और विरासत. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
- रॉय बर्मन, बी. के. (2009). जनजातीय समाज और विकास के परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
- सिन्हा, बी. (2016). जनजातीय समाज और संस्कृति. नई दिल्ली: ओरिएंट पब्लिशिंग।

वेबसाइट स्रोत

- भारतीय संस्कृति पोर्टल। (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित जानकारी. प्राप्त किया गया: https://www.indianculture.gov.in
- भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय। (2024). जनजातीय समाज और संस्कृति से संबंधित जानकारी प्राप्त किया गया: https://tribal.nic.in

**********//**//**//**********